

## भारत के पहले डॉल्फिन रिसर्च सेंटर में नषिक्रयिता

### चर्चा में क्यों?

भारत में डॉल्फिन संरक्षण को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि बिहार में स्थिति [नेशनल डॉल्फिन रिसर्च सेंटर \(NDRC\)](#) उन्नत उपकरणों और सक्षम मानव संसाधनों की कमी के कारण उद्घाटन के महीनों बाद भी **कार्यरत नहीं** हो पाया है।

### मुख्य बटु

- उद्घाटन एवं वर्तमान स्थिति:
  - पटना में [गंगा](#) के नजिक स्थिति NDRC का उद्घाटन 4 मार्च, 2024 को बिहार के मुख्यमंत्री द्वारा किया गया था।
  - इसके उद्घाटन के बावजूद, केंद्र अभी भी नषिक्रयि है, उपेक्षा का शिकार बना हुआ है और इसके काँच के दरवाजे बंद हैं।
- डॉल्फिन संरक्षण पर प्रभाव:
  - इस देरी के कारण भारत के राष्ट्रीय जलीय पशु, [गंगा डॉल्फिन](#) पर आवश्यक शोध में बाधा उत्पन्न हुई है।
  - **"भारत के डॉल्फिन मैन"** आर.के. सन्हा, जिन्होंने 15 वर्ष पहले NDRC का प्रस्ताव रखा था, ने प्रगति की कमी पर नरिशा व्यक्त की।
- आधिकारिक आश्वासन:
  - बिहार वन एवं [मुख्य वन्यजीव प्रतपालक](#) ने आश्वासन दिया कि NDRC वित्तीय वर्ष 2024-25 के भीतर परचालन शुरू कर देगा।
  - केंद्र का उद्देश्य डॉल्फिनों का संरक्षण करना, उनके व्यवहार और आवास का अध्ययन करना तथा मछली पकड़ने के दौरान डॉल्फिनों की सुरक्षा के लिये मछुआरों को प्रशिक्षित करना है।
- रणनीतिक सथान और महत्त्व:
  - 4,400 वर्ग मीटर में वसित यह सुवधि पटना विश्वविद्यालय परिसर में गंगा के पास स्थिति है, जहाँ डॉल्फिनों को उनके प्राकृतिक आवास में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।
- संरक्षण चुनौतियाँ:
  - भारत की 3,000 गंगा डॉल्फिनों में से आधे का नवास स्थान बिहार है, तथा नरिमाण और प्रदूषण जैसी गतविधियों के कारण इनके आवासों को खतरा है।
  - [राष्ट्रीय हरति अधिकरण](#) ने हाल ही में भागलपुर में पुल के मलबे से डॉल्फिन की संख्या के प्रत उत्पन्न खतरे को उजागर किया है।
- गंगा डॉल्फिन का महत्त्व:
  - ये लुप्तप्राय डॉल्फिन, जो दृष्टहीन (Blind) हैं और [इकोलोकेशन](#) पर नरिभर हैं, नदी पारस्थितिकी तंत्र के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
    - इकोलोकेशन एक तकनीक है जिसका उपयोग [चमगादड़](#), डॉल्फिन और अन्य जानवर पारवर्तित ध्वनिका उपयोग करके वस्तुओं का स्थान नरिधारित करने के लिये करते हैं।
  - वे न्यूनतम धाराओं वाले गहरे जल में पनपते हैं और [वन्यजीव \(संरक्षण\) अधिनियम 1972](#) तथा [अंतरराष्ट्रीय प्रकृतिसंरक्षण संघ \(IUCN\)](#) के दशानरिदेशों के तहत संरक्षित हैं।
  - 1801 में खोजी गई गंगा नदी डॉल्फिन ऐतहासिक रूप से भारत, नेपाल और बांग्लादेश में [गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना](#) और [करणफुली-सांगु नदी प्रणालियों](#) में नवास करती है।
  - गंगा नदी बेसिन में हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि ये नदियाँ मुख्यधारा और [घाघरा](#), [कोसी](#), [गंडक](#), [चंबल](#), [रूपनारायण](#) और [यमुना](#) जैसी सहायक नदियों में मौजूद हैं।

# गंगा डॉल्फिन

(*Platanista gangetica gangetica*)

## तथ्य

- मीठे पानी में ही रह सकती हैं; गहरे पानी को ज्यादा प्राथमिकता देती हैं
- सामान्यतः अंधी होती हैं; अल्ट्रासोनिक ध्वनि उत्सर्जित करके शिकार करती हैं
- पानी में साँस नहीं ले सकती; साँस लेने के लिये प्रत्येक 30-120 सेकंड में सतह पर आती हैं
- साँस लेने के दौरान निकलने वाली आवाज़ के कारण इन्हें 'सुर' भी कहा जाता है

## अधिवास एवं वितरण

- भारत, नेपाल और बांग्लादेश की गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी घाटियों में वितरित।
- भारत के 7 राज्यों असम, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में इनकी उपस्थिति देखी जा सकती है।

## संरक्षण की स्थिति

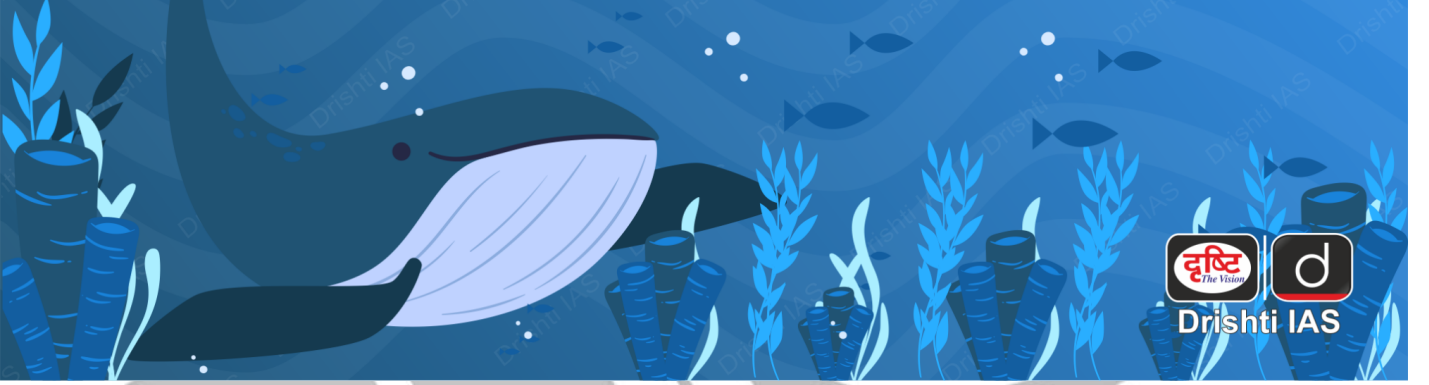
- IUCN रेड लिस्ट: संकटग्रस्त (endangered)
- CITES: परिशिष्ट I
- भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972- अनुसूची-I

## खतरे

- आवास की क्षति
- प्रदूषण
- वायुमय
- जलवायु परिवर्तन
- शिकार

## संरक्षण संबंधी प्रयास

- प्रोजेक्ट डॉल्फिन (2021): प्रोजेक्ट टाड़गर की तर्ज पर
- नेशनल डॉल्फिन रिसर्च सेंटर (2021): पटना विश्वविद्यालय (बिहार) में; भारत और एशिया का पहला
- समर्पित डॉल्फिन अभयारण्य:
  - विक्रमशिला अभयारण्य (बिहार) - 1991
  - हस्तिनापुर अभयारण्य (उत्तरप्रदेश) - प्रस्तावित



Drishti IAS